

पाल-दाधवाव नरसंहार

हाल ही में गुजरात सरकार ने पाल-दाधवाव नरसंहार के 100 साल पूरे कर लिये, इसे [जलयिँवाला बाग](#) से भी बड़ा नरसंहार बताया गया है।

- नरसंहार की शताब्दी पर गुजरात सरकार की एक वजिज़्पत्ता ने इस घटना को वर्ष 1919 के जलयिँवाला बाग हत्याकांड से भी अधिक क्रूर बताया।
- इससे पहले बिहार के मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि 90 साल पहले बिहार के मुंगेर ज़िले के तारापुर शहर (अब उपखंड) में पुलिस द्वारा मारे गए 34 स्वतंत्रता सेनानियों की याद में 15 फरवरी को "शहीद दिवस" के रूप में मनाया जाएगा।

पाल-दाधवाव नरसंहार:

- पाल-दाधवाव हत्याकांड 7 मार्च, 1922 को साबरकांठा ज़िले के पाल-चतिरिया और दधवाव गाँव में हुआ था, जो उस समय इंदर राज्य (अब गुजरात) का हिस्सा था।
- उस दिने आमलकी एकादशी थी, जो आदवासियों का एक प्रमुख त्योहार है जो होली से ठीक पहले मनाया जाता है।
- मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में 'एकी आंदोलन' के हिस्से के रूप में पाल, दाधवाव और चतिरिया के ग्रामीण वारसि नदी के तट पर एकत्र हुए थे।
 - राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र के कोलियारी गाँव के रहने वाले तेजावत ने भी इसमें भाग लेने के लिये कोटड़ा छावनी, सरिही और दंता के भीलों को बुलाया था।
 - वरिध का असर वजियनगर, दाधवाव, पोशानि और खेड़ब्रहमा में महसूस किया गया जो अब साबरकांठा के तालुका हैं; अरावली ज़िले के बनासकांठा और दंता तथा राजस्थान के कोटड़ा छावनी, डूंगरपुर, चित्तौड़, सरिही, बांसवाड़ा और उदयपुर, ये सभी उस समय की रियासतें थीं।
- यह आंदोलन अंग्रेजों और सामंतों द्वारा किसानों पर लगाए गए भू-राजस्व कर (लगान) के वरिध में था।
- तेजावत की तलाश में ब्रिटिश अर्द्ध-सैनिक बल लगा हुआ था। उसने इस सभा के बारे में सुना और मौके पर पहुँच गया।
- तेजावत के नेतृत्व में लगभग 200 भीलों ने अपने धनुष-बाण उठा लिये लेकिन अंग्रेजों ने उन पर गोलियाँ चला दीं और लगभग 1,000 आदवासियों (भील) को गोलियों से भून दिया गया।
 - जबकि अंग्रेजों ने दावा किया कि कुल 22 लोग मारे गए लेकिन भीलों का मानना है कि इसमें 1,200-1,500 लोग मारे गए।
- तेजावत, हालाँकि बिच गए और आज़ादी के बाद उन्होंने इस जगह का नाम "वरिभूमि" रखा।

मोतीलाल तेजावत

- एक आदवासी बहुल कोलियारी गाँव में व्यापारी (बनया) परिवार में जन्मे तेजावत को एक ज़मींदार ने काम पर रखा था, जहाँ उन्होंने आठ साल तक काम किया।
 - इस दौरान उन्होंने महसूस किया कि कैसे ज़मींदार आदवासियों का शोषण करते हैं और टैक्स नहीं देने पर उन्हें जूतों से पीटने की धमकी देते हैं।
- आदवासियों के अत्याचार और शोषण से नाराज़ तेजावत ने वर्ष 1920 में नौकरी छोड़ दी और खुद को सामाजिक कार्य एवं सुधार के लिये समर्पित कर दिया। आज भी स्थानीय पाल-दाधवाव हत्याकांड को शादियों और मेलों में गाए जाने वाले गीतों के रूप में सुनाते हैं। ऐसा ही एक गाना है **'हंसु दुखी, दुनिया दुखी'**।

वर्षों के प्रश्न

औपनिवेशिक भारत के संदर्भ में शाह नवाज खान, प्रेम कुमार सहगल और गुरबख्श सहि ढलिलों कसि रूप में याद कयि जाते है: (2021)

- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के नेता के रूप में
- 1946 में अंतरिम सरकार के सदस्यों के रूप में
- संवैधान सभा में प्रारूप समिति के सदस्यों के रूप में
- आज़ाद हृदि फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) के अधिकारियों के रूप में

उत्तर: (d)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/pal-dadhvav-massacre>

